सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

जीवन / साहित्यिक परिचय

जीवन परिचय :-

पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1897 ई० में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर गाँव में हुआ था।

इनके पिता पं० रामसहाय त्रिपाठी उ० प्र० के उन्नाव जनपद के अन्तर्गत गढ़कोला ग्राम के मूल निवासी थे। राजकीय सेवा में थे, इसलिए महिषादल में रहने लगे थे।

निराला की पत्नी का नाम मनोहरादेवी एवं एक पुत्री थी सरोज। माता-पिता का असामयिक निधन हो गया फिर एक पुत्र एवं एक पुत्री इनके लिए छोड़कर मनोहरा देवी भी चल बसीं।

रोजी-रोटी के लिए नौकरियाँ करते रहे एवं साहित्य-साधना में संलग्न रहे। सन् 1961 में निराला जी का स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक-परिचय

साहित्य साधना में निरत निराला जी ने रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय' का सम्पादन किया। तत्पश्चात 'मतवाला' का सम्पादन किया। 'गंगा पुस्तकमाला' का भी सम्पादन किया एवं 'सुधा' में सम्पादकीय लिखा।

निराले स्वभाव के धनी निराला जी ने विभिन्न कृतियां हिन्दी साहित्य को दीं —

काव्य ग्रन्थ —

अनामिका
परिमल
गीतिका
तुलसीदास
अणिमा
नए पत्ते
आराधना
तुलसीदास
राम की शक्तिपूजा
सरोज स्मृति

गद्य रचनाएं —

चतुरी चमार
बिल्लेसुर बकरिहा
प्रभावती
निरुपमा

निराला ट्रिक

अनामिका, आणिमा, गीतिका आराधना, नए पत्तों के बीच से परिमल के घर गयीं। वहाँ तुलसी की रामायन को निरुपमा ने स्टार्ट किया, प्रभावती भी ध्यान से सुनने लगी। तभी अचानक बिल्ले-सुर बड़ी चतुराई से मिमियाती बकरियाँ लेके निकला सारा मूड खराब कर दिया ॥"